स्पीनोजा रहस्यवाद (Mysticism)

रहस्यवाद धर्म–दर्शन का एक रूप प्रतीत होता है। धर्म–दार्शनिकों ने रहस्यवाद को धर्म से अलग रखने का प्रयास किया है। फिर भी, इन दोनों में इतनी अधिक समानता है कि रहस्यवाद को धर्म का पर्याय माना जाता है। प्रायः सभी धर्म रहस्यवाद से ओत प्रोत हैं। प्रो. ली. (Prof. Atkinson Lee) के अनुसार, रहस्यवाद को धर्म का सबसे सुसंगठित रूप कहा जा सकता है। (Mysticism is the most concentrated form of religion.) रहस्यवाद एक ऐसी अनुभूति है, जिसमें ज्ञाता और ज्ञेय, उपासक और उपास्य का भेद समाप्त हो जाता है। अर्थात् साधक और सिद्व एक हो जाते हैं। उन्हें अभेद दृष्टि की प्राप्ति हो जाती है। अतः यहाँ साधक और साध्य में अन्तर नहीं रहता है। दूसरे शब्दों में, आत्मा और परमात्मा में द्वैत नहीं रहता और आत्मा परमात्मा में विलीन हो जाती है। यह एक ऐसी अनुभूति है, जिसका अनुभव तो संभव है, किन्तु इसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। इसलिए रहस्यवाद को अवर्णनीय (indescribable) एवं अकथनीय (unspeakable) कहा गया है। 206 समकालीन भारतीय चिन्तक भट्टाचार्यजी ने भी इस बात की सम्पुष्टि की है। रहस्यवाद की कुछ परिभाषाएँ उल्लेखनीय हैं– प्रो. कैअर्ड (Prof. Caird) के अनुसार, "रहस्यवाद मन की वह प्रवृत्ति है जिसमें आत्मा और ईश्वर से सम्बन्धित सभी प्रकार के सम्बन्ध लुप्त हो जाते हैं। ("Mysticism is that attitude of mind in which all other relations are swallowed up in the relation of soul to God)

रसेल के शब्दों में, "Mysticism is in essence little more than a certain intensity and depth of feeling in regard to what is believed about the universe."

प्रो. ब्राइटमैन (Prof. Brightman) के अनुसार, "रहस्यवाद का अर्थ आध्यात्मिक सत्ता की साक्षात् अनुभूति है ("By mysticism is meant direct experience of what is believed to be divine reality.")

प्लेटो कवि, कलाकार एवं दार्शनिक कई रूपों में दीख पड़ते हैं। ये रहस्यवादी विचारक हैं। ये पेथागोरस, पार्मेनाइडस, हेराक्लीटस और सुकरात से प्रभावित थे। रसेल के शब्दों में From pythagoras plato derived…and all that is involved in the sample of the care intermingling of intellect and mysticism. जब ये आदर्श जगत् (ideal world) की बातें करते हैं तो इनके रहस्यवादी विचारों की स्पष्ट झाँकियाँ दीख पड़ती हैं। इसके अतिरिक्त, प्रत्ययों (ideas) एवं ईश्वर के विषय में इनके विचार रहस्यवाद से ओत प्रोत हैं। इसलिए इन्हें रहस्यवादी कहने में कोई अत्युक्ति नहीं है। रिपब्लिक, फीडे, पार्मेनाइडीज आदि से भी इस बात की पुष्टि हो जाती है। यों इनके शिष्य अरस्तु की रचनाओं में भी रहस्यवाद की झलक मिलती है।

स्पीनोजा को विभिन्न नामों से पुकारा जाता है। सर्वेश्वरवादी (pantheist), प्रकृतिवादी (naturalist), यथार्थवादी (realist), एकेश्वरवादी (monotheist), निरीश्वरवादी (atheist) आदि कई नामों से इन्हें विभूषित किया गया है। इन्हें रहस्यवादी (mystic) कहना अधिक उपयुक्त दीख पड़ता है। इनके लिए प्रकृति का प्रत्येक कण रहस्यपूर्ण है। ईश्वर प्रत्येक कण में व्याप्त है। इनके अनुसार, ईश्वर का ज्ञान आत्मानुभूति (intellectual) द्वारा हो सकता है। इनके अनुसार ईश्वर के साथ बौद्धिक प्रेम (intellectual love) पूर्णतया रहस्यमय है। इनके रहस्यवाद को स्पीनोजिज्म (Spinozism) कहा जाता है। इस रहस्यवाद ने अनेक विचारकों को प्रभावित किया है। इनका प्रभाव हीगेल आदि पर भी है। हीगेल ने स्वयं इनके प्रभाव को स्वीकार किया है। भारत में इनकी तुलना कबीरदास से की जा सकती है। तैलंग महाप्रभु ने भी उपर्युक्त बातों का समर्थन किया है।